om 1 Delhi Final 1_Page 1 and 2 18/03/2015 10:57 Page 12

सभी धर्म के पुरोधो ने माना परमात्मा 'शिव' एकनाम

एक मंच पर बैठे धर्म नेताओं ने किया परमात्मा के बारे में विचार-विमर्श

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। 'सबका मालिक एक' विषयक कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. आशा। साथ हैं ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन तथा डॉ. एस.एम. मिश्रा।

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। ब्रह्माकुमारीज़ के ओम शान्ति रिट्रीट सेंटर में शिवरात्रि का पावन पर्व बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभी ने परमात्मा शिव के ध्वज तले जीवन को बुराइयों से मुक्त करने की प्रतिज्ञा ली। इस अवसर पर अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किए गए। सर्व धर्म सम्मेलन में 'सबका मालिक एक' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में सभी धर्मों के जाने-माने वक्ताओं से भाग लिया।

ओ.आर.सी. की निदेशिका ब्र.कु. आशा ने कहा कि रात्रि शब्द का अर्थ अज्ञान से है। परमपिता शिव जब इस सृष्टि में आते हैं तब सभी मनुष्य आत्माएं अज्ञान नींद में सोई रहती हैं। सबसे बड़ा अज्ञान आत्मिक स्वरूप को भूल जाना हैं, जिस कारण मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार के दु:ख और अशांति आ जाती है। परमात्मा हमें सत्य स्वरूप की स्मृति देकर हमारी सारी बुराइयों को हर लेते हैं, इसी यादगार में आज तक भी हम शिवलिंग के ऊपर अक, धतूरे जैसी चीज़ें चढ़ाते हैं। व्रत की वास्तविकता के बारे में उन्होंने बताया कि व्रत का अर्थ सिर्फ एक दिन के भोजन त्याग करने से नहीं है, व्रत अर्थात् मन के दृढ़ संकल्प से जीवन में श्रेष्ठ कार्य करने से है। उन्होंने कहा कि कई लोग जागरण करते हैं, जागरण का भाव वास्तव में आत्मा की जागृति से है।

ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्य सचिव ब्र.कु. बृजमोहन ने शिव के तीसरे नेत्र के बारे में बताया कि यहाँ पर किसी स्थूल नेत्र की बात नहीं है बल्कि परमात्मा शिव ने हमें आत्मा का, व स्वयं का सच्चा ज्ञान दिया, इसी को तीसरा नेत्र भी कहा जाता है जिससे आत्माओं के सब दु:ख दूर हो जाते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय परिवर्तन का समय है, इसी समय सभी आत्माएं तमोप्रधान बन चुकी हैं। अब स्वयं परमात्मा शिव गीता के कथन अनुसार पुन: इस कलियुगी सृष्टि का परिवर्तन कर सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। ओ.आर.सी. की मुख्य राजयोग प्रशिक्षिका ब्र.कु. मधु ने सभी को योग द्वारा गहन शान्ति का अनुभव कराया।

ई.आई. मालेकर, मानद सचिव,यहूदी धर्मसभा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमें सभी के धर्मग्रन्थों का सम्मान करना चाहिए। उन्होंने कहा कि सभी धर्मों की शिक्षाएं समान हैं, अगर अंतर है तो उनको सिर्फ जीवन में उतारने का। जीवन का असली सत्य यही है कि हम सबसे प्रेम से व्यवहार करें, सबको सहयोग दें और जो वयवहार मेरे अनुकूल ना हो वैसा दूसरों से न करें।

मो.अहमद,राष्ट्रीय सचिव, जमात इस्लाम हिन्द ने कहा कि खुदा प्यार के साथ-साथ न्यायकारी भी है, इसलिए हमें भी चाहिए कि सबके साथ न्याय हो। हम सब उसके बन्दे हैं। किसी के साथ भेदभाव नहीं हो तभी इस विश्व में शान्ति और अमन कायम हो पायेगा।

डॉ. एम.डी. थॉमस,इन्सटीट्यूट ऑफ हारमनी स्टडीज़ ने अपने उद्-बोधन में कहा कि आज हम परमात्मा को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारते हैं, जबकि वास्तव में देखा जाए तो उसका एक ही रूप है। जिस प्रकार किसी एक ही वस्तु के अनेक देशों में भाषा के आधार से भिन्न-भिन्न नाम होते हैं, वैसे ही परमात्मा के भी अनेक नाम हैं। परमात्मा का प्यार सबके लिए समान है, वो किसी से भी जाति व धर्म के आधार से प्यार नहीं करता। जब हम उससे जुड़ते हैं तो हमें सारा ही विश्व एक परिवार लगता है।

गुरूबचन सिंह, उपाध्यक्ष, दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा प्रबंधन समिति ने कहा कि परमात्मा ने जब मनुष्य को रचा तो उसको अपने जैसा बनाया। जिस तरह परमात्मा बेहद है, हमारी सोच भी बेहद होनी चाहिए। हमारा जीवन सिर्फ अपने लिए नहीं है, इसका महत्व तभी है जब हम दूसरों के काम आते हैं।

डॉ. एस.एम. मिश्रा, संस्कृत विश्व-विद्यालय कुरुक्षेत्र ने कहा कि सभी धर्मों में परमात्मा को प्राय: ज्योति के रूप में ही माना जाता है, और शिवलिंग भी ज्योति स्वरूप का ही पर्याय है। हमारे देश में जितने भी प्रमुख शिव मंदिर हैं उनको ज्योतिर्लिंगम के नाम से ही जाना जाता है। अनेक भाषाओं और अनेक सिद्धान्तों के कारण लोगों में मतभेद पैदा हुए हैं। आज हमें आवश्यकता है कि हम ईश्वर की एकरूपता को स्वीकार कर सबका सम्मान करें। इस संसार का पतन तब से शुरु हुआ जबसे हमने उसको अलग-अलग समझना शुरु कर दिया।

ब्रह्मदेव ने माना 'ब्रह्मतत्व' निवासी निराकार शिव परमात्मा का अस्तित्व: त्रिनिदाद वैदिक विश्व-विद्यालय के उपकुलपति स्वामी ब्रह्मदेव ने कहा कि शिवरात्रि निराकार ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप ज्योतिर्लिंग परमात्मा शिव का मनुष्य समाज में व्याप्त अज्ञान अंधकार दूर करने हेतु अवतरित होने का यादगार दिवस है। उन्होंने कहा कि केवल पूजा-पाठ, व्रत आदि से ही नहीं, अपितु शिव के वास्तविक निराकार स्वरूप की पहचान तथा राजयोग द्वारा उनके साथ अंतरात्मा के सर्व सम्बन्धों की याद से ही मनुष्य अपने पापों को भस्म कर सकता है। उपरोक्त धर्म के पुरोधो ने तथाकथित रुप से परमात्मा शिव के अस्तित्व को स्वीकारा, चाहे वह अंशत: ही क्यों न हो!

आनंद व सुख की अनुभूति कल्पना में बस गई – बृजेन्द्र ओसवाल

बयाना-भरतपुर। वह बिना कानों के सुनने वाले, बिना हाथों के कर्म करने वाले तथा बिना आँखों के देखने वाले देह से न्यारे शिव परमात्मा निराकार ज्योति बिन्दु स्वरूप जन्म-मरण से मुक्त हैं। उक्त उद्गार बृजेन्द्र ओसवाल, उपखण्ड अधिकारी ने ब्रह्माकुमारीज़ के बयाना उप-सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित 79वें त्रिमूर्ति महाशिवरात्रि महोत्सव पर प्रकट किये। उन्होंने कहा कि वास्तव में परमात्मा शिव के दिव्य अवतरण का संदेश देने वाले इस भव्य आयोजन का यथार्थ आनंद व सुख की अनुभूति कल्पना में बस गई और परमात्मा का स्वरूप आज प्रत्यक्ष में अनुभव हुआ, यह अविस्मरणीय है।''

'एक शाम शिव पिता के नाम' नामक कार्यक्रम में बयाना उप-सेवाकेन्द्र ने नृत्य, गीत, संगीत एवं प्रवचनों के कार्यक्रम के माध्यम से 79वीं शिव जयंती का आयोजन बड़े भव्य रूप से किया। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण विदर्भ के सुप्रसिद्ध गायक ब्र.कु. अविनाश थे।

बयाना-भरतपुर। कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग करते हुए बृजेन्द्र ओसवाल, देवी सिंह बुडवार, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. अविनाश व अन्य।

इस अवसर पर ब्र.कु.संतोष ने दीप प्रज्वलन की प्रथा को निराकार परमात्मा शिव का यादगार बताते हुए कहा कि ''परमात्मा शिव सर्व मनुष्य आत्माओं के माता-पिता, सदगति दाता, दु:खहर्ता-सुखकर्ता व पतित-पावन हैं। परमात्मा शिव सर्वोच्च, सर्वमान्य, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्व से न्यारे हैं। गीता में वर्णित ''यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत...'' श्लोक के वचनानुसार परमात्मा शिव का इस भारत भूमि पर दिव्य अवतरण हो चुका है। यहाँ रात्रि शब्द घोर अज्ञान अंधियारे व तमोप्रधानता का प्रतीक है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता भरतपुर की राजयोगिनी ब्र.कु. कविता द्वारा की गई। कार्यक्रम में बृजेन्द्र ओसवाल,उप खंड अधिकारी, देवी सिंह बुडवार,अध्यक्ष, कृषि उपज मंडी समिति, तथा धर्मेन्द्र तिवारी,अध्यक्ष मंडी समिति आदि विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। विदर्भ के गायक ब्र.कु. अविनाश ने गीतों के माध्यम से बताया कि श्रीकृष्ण को सर्वगुण सम्पन्न 16कला सम्पूर्ण एवं मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने वाले भी परमात्मा शिव ही हैं। उनके सहज ज्ञान एवं राजयोग की शिक्षा द्वारा हम भी ऐसे बन सकते हैं।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510
सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088, Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info

सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । **विदेश** - 2500 रुपये (वार्षिक)
कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 14th Mar 2015
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.वी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।